मो. नसीम अख्तर

कैसी उनकी है ये महफिल क्या बोलें
चुपके चुपके तोड़ दिया दिल क्या बोलें

संदेहों की जब जब लपटें उठती हैं
हो जाते रिश्तों के क़ातिल क्या बोलें

आँखों में अश्कों का एक समुन्दर है
टुट रहा है दिल का साहिल क्या बोलें

देखी हमने भाई के हाथ में चिंगारी
आग लगाने में था शामिल क्या बोलें

अंत तरक्की का एक दिन जब होगा तो
हो ना जाए दुनिया जाहिल क्या बोलें

कोई राह हमको भला क्या दिखाए
अंधेरों में निकले हैं दीपक जलाए

ज़रुरत जिन्हें है वफाओं की हमसे
वो लब पर रखेंगे तबस्सुम सजाए

कई बार तोड़ा है उसने दिलों को
रहे घर में तन्हा ग़मों को उठाए

चमन की उदासी को समझे भला क्या
जो फूलों को पैरों से निकले दबाए

मुहब्बत उसी से करेगा ये "अख्तर "
मेरा ग़म घटाए या चाहे बढ़ाए

ISSN:2583-8849